The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 5 | May 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

कोविड-19 से उत्पन्न समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

इंद्र मोहन पन्त

शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,परिसर अल्मोड़ा

प्रो० इला साह

प्रोफसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,परिसर अल्मोड़ा

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

कोविड-19, रिवर्स पलायन, अल्मोड़ा, समाजशास्त्रीय अध्ययन

ABSTRACT

कोविड-19 वैश्विक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है , और भारत भी इससे अछूता नहीं है , प्रस्तुत शोध में कोविड-19 महामारी से प्रभावित होकर रिवर्स पलायन कर आये हुए उन उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है , जो अपने गृह जनपद में ही रोजगार कर रहे है , एवं अपने जीवन को व्यवस्थित करने का प्रयास कर रहे है। उन्हें इस महामारी से पलायन के समय एवं गृह जनपद आने के पश्चात किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई , इन समस्याओं का उनके द्वारा किस प्रकार सामना किया गया , यह जानना इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध पत्र जनपद अल्मोड़ा के उन ग्रामीणों पर आधारित है। जिन्होंने कोविड - 19 के समय से रिवर्स पलायन किया है, और वापसी के पश्चात् अनेक समस्याओं का सामना किया। कोविड - 19 एक ऐसी वैश्विक महामारी के रूप में उभरकर आयी जिसने विश्व की संपूर्ण सामाजिक संरचना को ध्वस्त कर दिया। इसकी शुरूआत चीन के वुहान शहर से 2019 के मध्य दिसम्बर से हुई। जिसमें आकारण ही लोग निमोनिया की चपेट में आने लगे। इनमें अधिकांश वुहान सी फूड मार्केट में मछलियों तथा जीवित पशुओं के व्यापारी थे। चीनी वैज्ञानिकों द्वारा इसे 2019 नोबेल कोरेनावायरस नाम दिया गया। माना गया है कि कोरोना वायरस के संकेत 1930 के दशक से ही प्राप्त होने लगे थे। महिला वैज्ञानिक डोरोथ हामारे ने **1966** में प्रकाशित अपने शोध पत्र में स्पष्ट किया "कि यह मनुष्य की श्वसन प्रणाली पर चोट करने वाला घातक वायरस है। यह शब्द **1968** में प्रथम बार प्रयोग किया गया उस समय तक यह वायरस इतना घातक नहीं था।"[1]

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरेना को परिभाषित करते हुए 'को' का अर्थ कोरेना 'वी' वायरस तथा 'डी' डिजीज बतलाया है। यह मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा होता है। तेजी से फैलने के साथ-साथ वह घातक भी होता है। प्रारम्भ में इसे एन कौव नाम दिया गया। जिसका संबंध 'विरदाई फैमिली से माना जाता है।

कोविड-19 वैश्विक महामारी का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र चाहे वे सामाजिक हो, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक या अन्य सभी तक पहुंचकर इसने अपना ताण्डव दर्शाया है। शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने तो इसे मानवता का सबसे बुरा संकट कहते हुए कहा है कि इस 'त्रासदी के बाद संसार ऐसा नहीं रहेगा।

इसने सामाजिक रूप से जनमानस को लाचार बना दिया, इंसानियत रिश्ते, मानवता तथा नैतिक मूल्यों को तेजी से पतन हुआ इतना ही नहीं इसने संपूर्ण विश्व को आर्थिक मंदी की स्थिति में लाकर खड़ कर दिया। इसके आगामी परिणामों को लेकर विशेषज्ञ मानते है, कि आज इस बात को लेकर आम सहमति है कि अगले डेढ़ से दो साल तक पूरी दुनिया किसी न किसी रूप में संभवतः कोविड-19 के तत्कालीन खतरे से जुझती रहेगी और उसके बाद भी पुनर्निर्माण और इसके स्थायी प्रभाव निःसंदेह कई वर्षों तक महसूस किये जाते रहेंगे।

"भारत में पहला अधिकारिक मामला 30 जनवरी 2020 को केरल के छात्रों में पाया गया। इन्हें वुहान शहर से निकालकर लाया गया था।"[2] यहां इस महामारी को काफी संवेदनशीलता से लिया गया। इसके लिए लॉकडाउन की प्रक्रिया को अपनाया गया। लॉकडाउन के कारण मनुष्य के जीवन में आये हुए ठहराव से लोग घरों में कैद हो गये। एक-दूसरे से मिलने-जुलने या स्पर्श करने पर प्रतिबंध लग गया एक-दूसरे को शंका की दृष्टि से देखा जाना, मुंह, नाक को मास्क से ढकना और बार-बार हाथ धोना जैसे नियमों का नियंत्रण स्थापित हुआ।

कोविड-19 के प्रारम्भ होने के बाद से ही इसके कारण रोकथाम परिणाम की समस्याओं के संबंध में विद्वानों द्वारा अपनी लेखनी से समाज को एक दिशा देने का प्रयास किया है।

कुमार जितेन्द्र (2020) ने अपने "आलेख 'कोविड-19 का सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य पर प्रभाव' में स्पष्ट किया है, कि कोरोना संकट के बाद एक बार फिर से आत्मनिर्भरता एवं स्वालंबन को प्राथमिकता दी जा रही , लॉकडाउन के कारण घरेलू सामानों के प्रति लोगों नजरिया परिवर्तित हुआ है, जिससे आत्मनिर्भरता को बल मिला है"। [3]

मीना मीनाक्षी(2020) : ने "अपनी पुस्तक **'वैश्विक सन्दर्भ में कोविड-19 चुनौतियों एवं संभावनाएं'** में लिखा है, कि कोविड-19 महामारी के कारण लोगों में भय ,तनाव ,रोजी रोटी का संकट उत्पन्न हुआ , वही सकारात्मक प्रभाव के रूप में इन्टरनेट तकनीकी के इस्तेमाल से मेल जोल बढ़ना ,अपनों का महत्त्व समझना , पर्यावरण स्वच्छ ,शादी-विवाह में खर्च का कम दबाव आदि प्रभाव परिलक्षित हुए"।[4]

सिंह एवं पटेल सिंह और पटेल (2020): ने पाया कि "अधिक लोग COVID-19 से बीमार हो रहे हैं, क्योंकि महामारी के दौरान प्रवासी अपने गृह राज्यों में वापस जा रहे हैं। इससे कोविड मामलों की संख्या काफी बढ़ गई है. इन प्रवासियों को नए कौशल सीखने में मदद करना और सभी को सुरक्षित रखने के लिए उनके गांवों में समर्थन देना महत्वपूर्ण है"।[5]

उपरोक्त आधार पर स्पष्ट होता है कोविड-19 वैश्विक महामारी में जितनी मौते हुए इससे पहले कभी नहीं देखी गयी। घबराहट, तनाव, चिंता, पारिवारिक भरण पोषण का संकट, बेरोजगारी आदि अनेक कारणों से लोग पलायन के लिए मजबूर हो गये। कई ऐसे उदाहरण भी सामने आये। जिसमें यातायात की कमी के कारण लोग पैदल ही पलायन करने लगे।

जहाँ तक उत्तराखण्ड राज्य की बात है यहां इस प्रकार का पहला मामला राजधानी देहरादून में 15 मार्च 2020 को पाया गया और छोटे मोटी नौकरियों के लिए गृहजनपद से लौटे ग्रामीणों में लॉकडाउन से बंद सभी संस्थानों के कारण रोजी रोटी का संकट गहरा गया। घर लौटना उनकी आवश्यकता ही नहीं मजबूरी बन गया।

पलायन का तात्पर्य किसी एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे सापेक्षित स्थायी गमन की प्रक्रिया को माना गया है। लेकिन कोविड - 19 की दशहत से लोग रिवर्स पलायन कर अपने गृहजनपद लौटे है। रिवर्स पलायन का अर्थ है। "यह प्रवासियों का अपनी मातभूमि पर पुनः लौटने का आंदोलन है।"[6] इस रिवर्स पलायन को इस दौर में चरम सीमा पर देखा गया। इसका मुख्य कारण लोगों को रोजगार छिन जाना और या आधे वेतन में काम करने की बाध्यता रही ऐसे में लोगों ने गृह जनपद लौटने का चुनाव करना उचित समझा।

शोधार्थी ने ऐसे लोगों पर शोध पत्र लिखने का प्रयास किया है जो पहले तो अपने गृहजनपद से रोजगार के लिए अकेले था परिवार के साथ बाहर गये और विशेष अवसर पर ही गृहजनपद आते थे लेकिन कोविड-19 के पश्चात पुनः अपने गृहजनपद आकर अपना कार्य कर रहे है और यही रहने का लक्ष्य निर्धारित कर चुके है।

उद्देश्य - गृहजनपद लौट कर यही पर कार्य कर अपना जीवन यापन करने वाले उत्तरादताओं की समस्याओं को जानना, समस्याओं से उत्पन्न प्रभावों का मूल्यांकन करना।

शोध प्रारचना - प्रस्तुत शोध अन्वेषणात्मक एवं विवरणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। इसके लिए उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल में अल्मोड़ा जनपद के हवालबाग ब्लाक के ग्रामीणों का चयन किया गया है।

जनपद अल्मोड़ा को चुनने का प्रमुख उद्देश्य ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग उत्तराखण्ड की जून 2021 रिपोर्ट को बनाया गया है। जिसमें सर्वाधिक पलायन अल्मोड़ा में होना पाया गया। जिसका प्रतिशत 27.97 तथा संख्या 14,850 है।

अध्ययन के लिए हवालबाग ब्लाक जो 11 ब्लाकों में सबसे बड़ा है, के गांवों का चयन किया गया है। इसमें 126 ग्राम पंचायते एवं 234 ग्राम पंचायते हैं। 72613 जनसंख्या में 35,323 पुरुष एवं 37,290 महिलाएं सम्मिलित है। ग्राम्य विकास एवं पलायन निवारण आयोग के अनुसार कोविड-19 महामारी के दौरान हवालबाग ग्राम पंचायतों में

लौटे प्रवासियों की कुल संख्या 4,126 है जिसमें से 2020 तक परिस्थितियों की अनुकूलता के कारण 2,990 प्रवासी अपने कार्य क्षेत्र में लौट गये शेष 1,226 प्रवासी हवालबाग ब्लॉक में ही रह कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

प्रस्तुत शोध में चयनित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक उत्तरदाता 30-40 वर्ष आयु के है। जिनका प्रतिशत 70.37 तथा 40 से 50 वर्ष की आयु के 29.63 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। सभी 100 प्रतिशत उत्तरदाता पुरुष है। सामान्य जाति 66.65 प्रतिशत अनुजाति 22.23 प्रतिशत तथा 11.12 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग के सम्मिलित है। इनमें 88.88 प्रतिशत विवाहित तथा 11.12 अविवाहित तथा 81. 48 प्रतिशत संयुक्त तथा 18.51 प्रतिशत एकाकी परिवारों में निवास करते है।

चयनित उत्तरदाता अपने गृह जनपद में ही रोजगार कर रहे है या रोजगार के अवसर खोज रहे है। अध्ययन के लिए हवालबाग ब्लॉक से चार गांवों का चयन किया गया है जिसमें दो गांव 'घनेली' एवं 'ज्योली' सुदूर क्षेत्र तथा दो गांव शहर अल्मोड़ा के पास 'सरकार की आली' एवं 'दुगालखोला' हैं। जिनमें यातायात की सुविधा उपलब्ध है। अध्ययन हेतु इन चार गांवों में रिवर्स पलायन कर आये हुए उत्तरदाताओं की चयन प्रक्रिया के लिए स्नोबॉल पद्धति का प्रयोग किया है। इसका तात्पर्य शोध की ऐसी पद्धति से है जिसमें अनुसंधानकर्ता कुछ संबंधित उत्तरादाताओं के साथ कार्य प्रारम्भ करता है जिनके विषय में अपने जानकारी प्राप्त होती है फिर ये उत्तरदाता शोध के मापदण्ड के अनुसार दूसरे उत्तरदाता का नाम बतलाते है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है। जब तक पर्याप्त संख्या में साक्षात्कार के लिए उत्तरदाता उपलब्ध न हो जाये।

अतः उपरोक्त आधार पर शोधार्थी को विभिन्न कठिनाईयों के पश्चात मात्र 27 उत्तरदाता मिले जिन्हें शोध के लिए चयनित किया गया। शोध पत्र के प्राथमिक तथ्यों के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार तथा अवलोकन तथा द्वितीयक स्त्रोत हेतु संबंधित साहित्य, पुस्तकें, इण्टरमेंटे को सम्मिलित किया गया है।

सर्वप्रथम प्रश्न के आधार पर उत्तरदाताओं के गृहजनपद लौटने के कारणों को जानने से प्राप्त प्रत्युत्तर निम्नवत पाये गये।

गृह जनपद लौटने के प्रमुख कारण संबंधी तथ्य

सारणी संख्या - 01

क्र०सं०	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	रोजगार छिन जाना	18	66.66
2	मानसिक तनाव	05	18.52
3	मजबूरी	04	14.82
4	**योग**	**27**	**100.00**

उपरोक्त प्राप्त तथ्यों में सर्वाधिक लोग रोजगार छिन जाने तथा आगे फिर न बुलाये जाने के कारण गृहजनपद में ही रहने के लिए बाध्य है इनका प्रतिशत 66.66 है। 18.52 प्रतिशत ने मानसिक तनाव, चिंता, घबराहाट को तौ 14.82 ने प्रतिशत मजबूरी को गृहजनपद लौटकर यही रहने का कारण बलतया है।

गृह जनपद लौटने के पश्चात कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हुई है और यह लक्ष्य निर्धारित होने पर कि पुनः लौट कर कार्यक्षेत्र में नहीं जाना हैं समस्याएं और अधिक बढ़ती दिखायी दी। जानने के प्रयास पर कि सबसे प्रमुख समस्या किस प्रकार की थी, तथ्य निम्नवत रहे।

गृह जनपद लौटने से उत्पन्न समस्याओं का विवरण

सारणी - 02

क्र०सं०	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	रोजगार की	04	11.82
2	पारिवारिक भरण पोषण	03	11.12
3	बच्चों की शिक्षा की	02	7.40
4	कृषि को पुर्नजीवित करने की	05	18.51
5	उपरोक्त सभी	13	48.51
6	**योग**	**27**	**100.00**

प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि अधिकांश 48.15 प्रतिशत उत्तरदाताओं विभिन्न कारणों जैसे: रोजगार छिन जाने के कारण आर्थिक अभाव बच्चों की शिक्षा भरण पोषण और गांव में भूमि होने के पश्चात् भी उसको पुर्नजीवित करने की चिंता जैसी समस्याओं से अवगत कराते हुए उपरोक्त सभी प्रकर की समस्याओं के विकल्प का चुनाव किया। 11.12 प्रतिशत ने पारिवारिक भरण पोषण 7.40 प्रतिशत ने बच्चों के शिक्षा तथा 18.51 प्रतिशत ने स्वयं के पास कृषि भूमि को पुर्नजीवित करने जैसी समस्याओं को सामने रखा।

कोविड - 19 में गृह जनपद से दूर रहने वाले लोगों या परिवारों के अचानक गृहजनपद में लौट कर आ जाने से परिवार में तनाव, महिलाओं के कार्यबोझ में वृद्धि हुई। जो बच्चे स्वतंत्रता पूर्वक अपना जीवन जी रहे थे, घर में वृद्धजनों का नियंत्रण उन पर भारी पढ़ रहा था। शहर से आयी महिलाएं जंगल, कृषि कार्यों को करने में यदि असहमति दिखलाती तो गांव में रहकर जीवन यापन करने वाली महिलाएं उन्हें ताना मारती, कलहपूर्ण वातावरण में वृद्धि हुई इस संबंध में चयनित उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया निम्नव्रत रही -

गृह जनपद लौटने पर अपनो की प्रतिक्रिया

सारणी संख्या - 03

क्र०सं०	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सहमत	14	51.85
2	असहमत	05	22.22
3	तटस्थ	07	25.93
6	**योग**	**27**	**100.00**

प्राप्त तथ्यों में अधिकांश उत्तरदाताओं ने उपरोक्त परिवार में उत्पन्न विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर अपनी सहमति व्यक्त की है। जिनका प्रतिशत 51.85 रहा। 22.22 प्रतिशत इस प्रकार की समस्या व वातावरण से असहमत तो 25.93 प्रतिशत तटस्था की स्थिति में पाये गये जिन्होंने किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी।

नये व्यवसाय को प्रारम्भ करना सभी रिवर्स पलायन कर आये हुए। उत्तरदाताओं ने एक चुनौती पूर्ण कार्य बतलाया। इसको प्रारम्भ करने के लिए धन की नितांत आवश्यकता थी। इस विषय पर उनकी प्रतिक्रिया निम्नवत प्राप्त हुई।

नये व्यवसाय के लिए ऋण लेने संबंध तथ्य

सारणी संख्या - 04

क्र०सं०	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	21	77.77
2	नहीं	06	22.23
6	**योग**	**27**	**100.00**

प्राप्त तथ्यों में 77.77 प्रतिशत सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने ऋण लेने की बात की है। 22.23 उत्तरदाताओं ने ऋण लेने को अस्वीकार किया है। ऋण लेने वालों से ऋण के स्रोतों को जानने के प्रयास में सर्वाधिक 51.85 प्रतिशत ने बैक 3.14 प्रतिशत ने जमीन बेचकर तथा तथा 14.81 प्रतिशत ने आभूषण गिरवी रखकर अथवा ब्याज दर में रिश्तेदारों से ऋण लेने की बात कहीं। साथ ही वर्तमान अपने नव निर्मित व्यवसाय से उनकी संतुष्टि/असंतुष्टि का मूल्यांकन भी किया गया। जिसमें 18.53 प्रतिशत ने सामान्य संतुष्ट 51.85 प्रतिशत ने अस्तुष्ट तथा 18.51 प्रतिशत ने संतुष्ट होना स्वीकार किया शेष 22.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा ऋण नहीं लिया गया। सारणी संख्या 05 एवं 06 के आधार पर तथ्यों को स्पष्ट किया गया है।

ऋण लेने के माध्यम से संबंधित तथ्य

सारणी संख्या - 05

क्र०सं०	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	बैंकों से	14	51.85
2	जमीन बैचकर	03	11.12
3	रिश्तेदारों से	04	14.81
4	अन्य	06	22.22
6	**योग**	**27**	**100.00**

अंतिम प्रश्न के रूप में उत्तरदाताओं से संतुष्टि/असंतुष्टि के विषय में पूछे जाने पर उत्तरदाताओं ने अपने विचारों को निम्नवत साझा किया।

- संतुष्टि/असंतुष्टि के आधार पर संतुष्ट होना उनकी मजबूरी है। इसके अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प नहीं था तनाव, दहशत कमी और पारिवारिक सानिध्य तो मिला लेकिन बेरोजगारी का दर्द भुला नहीं जा रहा है।

- असंतुष्टि को प्रमुख कारण नौकरी करने पर मासिक आय प्राप्त होने से उसमें निश्चितता थी, उसी के आधार पर पारिवारिक बजट बनाया जाता था। व्यापार से होने वाली कमाई अनिश्चित व अपर्याप्त है।

- वर्तमान में नया व्यापार, ग्रामीण क्षेत्र तथा ऑनलाइन के कारण व्यवसाय कठिनता से संचालित होता है। भविष्य की चिंता के लिए चुनौती भी।

इसके अतिरिक्त परिवार में तनाव, सामजस्यता का संकट बच्चों की शिक्षा, पूर्व में विशेष अवसरों पर आने पर जो सम्मान प्राप्त होता था। उसमें आयी कमी जमीन बेचने की पीड़ा, शारीरिक श्रम की अधिकता आदि अनेक समस्याओं की रिवर्स पलायन कर आये हुए उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया। भविष्य में बहुत सारी चुनौतियों व जीवन की जटिलता के प्रति भी वे चिंतित दिखायी पड़े।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Balaram, P. (2020, May 15). *Putting a face to Dorothy Hamre, the experimental scientist who discovered the coronavirus*. Frontline. https://frontline.thehindu.com/dispatches/article31584134.ece

2. Rath, R. S., Dixit, A. M., Koparkar, A. R., Kharya, P., & Joshi, H. S. (2020). COVID-19 pandemic in India: A Comparison of pandemic pattern in Selected States. *Nepal journal of epidemiology*, *10*(2), 856–864. https://doi.org/10.3126/nje.v10i2.28960

3. कुमार जीतेन्द्र -कोविड' ,19 का सामाजिक सितम्बर-अप्रैल, यूको रायपुर प्रभाव, आर्थिक परिदृश्य पर प्रभाव-2020,पृष्ठ-8-12.

4. मीनाक्षी मीना ,'वैश्विक सन्दर्भ में कोविड-19 चुनौतियाँ एवं संभावनाएं ', नोशन प्रेस चेन्नई ,2020.

5. *COVID-19: Examining the Impact of Lockdown in India after One Year*. (2021, March 24). Economic and Political Weekly. https://www.epw.in/engage/article/covid-19-examining-impact-lockdown-india-after-one

6. https://www.migrationdataportal.org/themes/return-migration